

श्रीजरोत्रिणयत्त्रः येथाम्यायत्रिकान्य धनतः त्यात्रक्षेणस्य अपनास्त्रिति हैः स्थारमान्य सामान्य विकास स्थानिक स्थान अभिवतिन स्विचित्र संभाषित्र हित्तु हित्तु हित्तु हित्ता है कि सन्देन स्वापन ता अस्मिनं देश स्थाः असिन्त्ये विभूक्ते का ता कर्ति स्था विभूक्ते न्यंथराभारतारा म्हान व द्यालयामध्येतप्राचं मध्यम् निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्मा के निर्मा के निर्मा के निर्मा के निर्मा क्षेत्रकार्यक्षिक विश्वास्त्रकार के स्वति देश के स्वति विश्वास के स्वति के स्वति विश्वास के स्वति के स्वति विश्वास के स्वति के स्वत क्रिक्वारमाह्य हिन्द्र अस्ति । POST AND THE PROPERTY OF THE PROPERTY OF THE PARTY OF THE PROPERTY OF THE PROP विकारिक्षा के प्रतिकार करण एउन्हें के प्रतिकारिक विकारिक विकार वाचाराक्षात्रेणकर्तिक निर्देशकार्थक निर्वेशकार्थक निर्वेशकार्यक निर्वेशकार निर्वेशकार निर्वेशकार्यक निर्वेशकार निर्वेशकार निर्वेशकार निर्वेशका भूगेन तस्य अवस्थियामायव्जि वित्य ज्ञान दिन्द्र ने देव हरता वित्र वित्र स्थान 

33531

क्राया राजने व विरहणे के व्याप्त का विराम के विर निर्मानियात्रियात्राचनः श्रदेशनेयात्राय्युष्ठियात्राक्षित्राक्षित्राक्षित्र व्यास्त्रात्वास्त्रम् स्वयं आवन्त्रथ्यस्थादिन्ननं स्थलावाना क्रिक्नार्का स्थलाना वालाम् ताला हाला का निस्ति हाला हिल्ला हिल्ला हिल्ला है। 30331 संसापीय विच्यान ना कि वाष्ट्री विज्यान विज्यान म BENDING THE POLICE OF SERVEN SERVENCES क्रिया है जिस्से हिल्ली के लिए कि विकास कि स्थानिक विकास कि विकास कि विकास कि विकास कि विकास कि विकास कि विकास विवासी-काष्ट्रमान्य वार्त्यान्य प्रतिभूत्रमान विवासी वार्त्य विवासी वार्त्य वार्य वार्त्य वार्य वार्य वार्य वार्य वार्य वार्त्य वार्त्य वार्त्य वार्त् CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

द्रण्डान्यिकेषिकियाव्या प्रेमण्डार्ष्य वार्यमाने कीवान्या वार्य के विश्व क्षित्रीयाचे महत्त्वमाराज्यका ज्ञानाच्या क्षेत्रहरू कार्या क्षेत्रहरू कार्या क्षेत्रहरू क्रांग्या है। विकास के वितास के विकास क क्राक्षण्याक प्रकार के जाती है जिस्सा के किया है जिस किया है जिस के किया है जिस किया है जिस के किया है जिस किया है जिस के किया है जिस किया है जिस के किया है जिस किया है जिस के किया है जि विश्वास्त्राक्षात्रात्र अने विश्वास्त्र के त्या विश्वस्त्र के त्या विश्वस्त के त्या विश्वस्त्र के त्या विश्वस्त्र के त्या विश्वस्त के त्या विश्वस्त्र के त्या विश्वस्त के त्या विश्वस्त् वया जिल्ला में के विश्व के विश्व के किया है के विश्व के किया है के विश्व के किया है कि विश्व के कि या क्षात्राची है कि विकास के कि विकास के वितास के विकास क न्यानिक्ष के स्थानिक स िल में के किया है कि किया में किया में किया है किया है किया है कि किया है किया है किया है किया है कि किया है कि किया है किया है कि किया है किय निजयतीर होता प्रणाचिका के विकास माना के विकास करते हैं। विकास

7-1-10 10 10 10 10

ताननवाधीका विद्यासम्बद्धाते याव प्रमाने प्राव्याता जासित हुणयन्य स्वित्रे देशियम् द्रावितास्य स्वानिय स्वानिय दिनप्रवास अध्याने वार्ति के क्षित्र प्राप्ति वार्ति के स्वति स्वति के स्वति स्वति के स्वति स्वति के स्वति स् त्यन्तरमेश्वयनस्तर्भः धनमत्याचा कारम्याचानास्त्रमात्राः । क्राक्रिकार के जानिस्वामाद्या मार्च स्थान सन्देश प्राणितिक वत्यारणुक्तेष्यः कार्याच्यवनारा धतवत्यव इपन्दर्शकालपुक्रे । क्रेम्केश्वीत्माप्रम न्यापास्य निवस्त्र स्वरूपित्स्य स्वरूपित्स्य । 

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

ध्लुरीचार्य मेर्ग ने स्वाहित हैं कि स्वाहित हैं कि स्वाहित है जिस्से हैं कि स्वाहित हैं कि स्वाहित हैं कि स्वाहित हैं कि स्वाहित है जिस्से हैं कि स्वाहित है कि स्वा धन्मा स्थि श्रुवायती अस्ता अञ्चलका च का चूराच र द्वार व स्था व्यक्तित्वाचा क्रिक्तिव चार्कातिक विश्वविश्वकी स्व विश्वविश्वति । लित्विका उद्यावयन में ने विकाय के अने हैं ने हिन्दी में हैं कि विकास के विकास कि कि विकास कि वि विकास कि वि विकास कि वि विकास कि रमान्यान विकास ब्रमण्योग्नम् मिल्यार्थितः स्थार्थितः स्थार्थितः स्थार्थितः स्थार्थितः स्थार्थितः स्थार्थितः स्थार्थितः स्थार्थितः विद्यानिक विद्या

व्यवक्रियसम्बद्धाः प्रमानिक्षाः विष्यम् कारणान्ध्र मिला है कि है है कि यक्तिकित शिर्विष्ठारिकिति विच्याचित्रायान्ति सेत्रिकेरियम gen सीनाजर्बिए-मायुक्तवेकार लेकासको ज्याका सुरक्ते प्रक्रंपन कियान स्वकार्या विकास मध्या मुनिस्स विस्वादत स्वास्य ४ त्यामाध्यातीतत्त्राष्ट्रतार् रदोतेभ्येत्रतेत्र्यं अन्तिवयात्रायकः पत्रकातान्त्र वार्षेत्र कार्यकाः स्थिति विद्यान्त्र वार्षेत्र स्थानित विद्यान्त्र वार्षेत्र स्थानित विद्यान्त आम्बेन्स शिव्या केविन्य स्थान क्षेत्रसंस्था का का क्ति के के के कि हैं ने के कि हैं विषय है विषय है विषय कि कि विषय कि कि विषय कि कि विषय कि कि विषय कि विषय कि TR: 120-5 Landing Sharman Try Delhi Dight ed by Sarvagya Sharada Peetham

मा ज्यानि इसे संस्वाय से बात व स्थाय जा त्यां मारा है। तो सा स्थाय से प्राप्त के प्राप् विगरिकाका व्यक्ति विद्युते वयका विग्रेश विश्व वि यामुबाच च्यासिय स्थापमुक्रीतामामुब्रिकातास्याम् स्थापानु सरस्यस्य मा मानित्य द्रताव पुकारितः क्रातिकात्यस्त्य आकाश्चित्रास्त्य व्या द्रताः प व अधिक है। त्या के के हिंग का माने किया है है है कि विकास है। ति है कि विकास है जारित के बार्चारितिस के स्ट्रिबस्तितिस्तर स्ट्रिक्टिन प्रक्रिक इत्तेषुत्रः क्रिके च्रिकेतः विवस्य स्तिकार स्वाचेश्वर्कः CC-0. Lal Bahadul Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

A

वायस्थायद्वास्थ्या पाष्डातियहत्त्वातायम् की संवितिहिनं स्वान्य म्ब्रामिशोभ्य में विने के विनिध वेसि विचस्क म्युक्त एको। वानिस नामस्यानमस्यान् महासाम्यानम् वेद्यानामस्यान तवसानित्राम् वरा अवेदेश्यनाता वर्षे त्याताहेता सार्वासारास लिति सा वर्णमुन्। अतिसामस्य स्वायन् प्रत्ये पः सार्व -माना ज्यासिक राज्यात माना या क्षेत्रिक संस्था स्थापित गयतंत्रम ब्रह्मविद्धातान्वेषितराज्याः स्थायतं नयोगानुन्तः स्न कारकारिकामानारारेहराकीयम् प्राराहानाम्योगामाः स्थान ale A State Control of the Control o मताराज्याक्यांनी ताचा मुग्दिलेचाद्वाचारे का मुक्तिरिली तेत्र संचा अवविभिन्दरस्व विपर्का ना विद्यात्मित्रा सामा दिनिक तत प्रस्पार अवस्थिरात्रहुत्वलेरा से सेवल स्त्रस्तित्र तराथा है। रिनेना ति एवा वर जानस्य म्हाराज्यस्य रियाणे रनेवा पुत्रान्समार्ष्य साता व वहां विस्त्रता याम्बर्सिकरोपेन मेन् ब्रोगिनमञ्ज्ञ ज्ञानाम एकेर्ना त्रात्र स्वर्ग क्र क्षीनिर्देश एउँगारमधीसाम नियमित्र मिलामित्र एउँगारिका तर्सामा पप्रकृतीकता गोषुना स्थाने अत्र पुराने सीत्य एक जो व न्याक्राण्डल क्रिक्स क्रिक्स प्रकार क्रिक्स क् CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

स्थाः प्रथमन्त्रम् यात्रमाः पुतस्यामीसमस्याजानातास्त्रनातास्त्र मध्येत्रातिमायस्य वीस्त्रकारिन स्त्रेप्रसालाः श्रीविकतम्पर आंत्रतास्य न्यांको यतः कामकान्या न्यातस्यां से अध्यातिकार्याः क्रियां व्यायभूमा प्रकार जीविकातिकः मञ्चाने तेता वार्ति व स्वार्थ सर्वित त्रावना अराजा ता प्रार्थित है। विता यह जान स्वत विषेत्रित्वामारे विश्वित रतास्त्रामा की की वतिस्तर मा विच स्वितीत ज्यामा वेस्पाच हेच्छे तामवा खुताति थिः तसका लास कामचारमणमाम्बर्धाः प्रमादिक्षेत्रकारः साम्यवभावना विद्यान मणुवानाव्याम्ब्रात्रेवमारे ब्रह्मितंत म्ब्रात्वाक्षमा सिद्ध िप्याम्यात्मवा सामे कान संघत्यं तया भ्रतत्य स्था विद्यानित प्राप्ति स्था विद्यानित स्थानित स्था विद्यानित स्यानित स्था विद्यानित स्यानित स्था विद्यानित स्यानित स्था विद्यानित स्यानित स्था विद्यानित स्था विद्यानित स्था विद्यानित स्था विद्यानित स्था विद्यानित स्था विद्यानित स्था स्था विद्यानित स्था विद्यानि अध्य उचा छ।। व ति विद्या करा का ति हो ति । अध्य कि विद्या कि विद्य

रेशियस्मामीतनो देशान्तरेयुनुः शर्शकायमाह्यानुं ज्ञाम यूपिकी मिन्नि स विनायवानात्रियमञ्जूष्ठानञ्जूष्ठानुष्टा कालानु द्वार्का कालानु स्वापः संवयका वेहें ता होने तेत्र सद्यार के व्यवस्था के कि का का कि का का कि जायवे स्थिता सामा जिल्ला है। ते स्थान स्था व्यामाय अनवामावामा हा शाहामारामा होना हेन प्रशास स्थाप धिवर्रोष्ट्रेस्ट्रिक्स्य क्रिक्स केर्य लश जीयस्वस्य क्षेत्रियतः श्येबियाहिताविति वृत्य जीत्वेवये स्वाप नि माध्ययमा सामाप्राह्यसम् एवंसा उने सी सामादीव पितारते TOTAL CC-0. Lai Baitsduis Sastri University. Delni. Digitized by Sarvadya Sharada Reetham

न्यक्षर्थः सर्वेतिः विज्ञात्रयम् सर्वे विज्ञाति सोमानंबम्बियात भी द्वारा व स्वासाः कर वामा स्वरासामा व खर ओक्ताओगात्वाहरू त्र प्रश्ने के त्री से ते विश्व ते विश्व त्री विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व व लेकेन्यायमा एसलेकियां वाची वास्तरे ता मेपातिय मही त्ये व्रतराजन्य ऋले प्रयक्तिश्राम सामाप्रमायसम्भवति वात्री विकास शत वृधि छिर उग्रेच च्यानुस्ति त्राम्यके विश्वविद्यात्री कर्ने व्यवतिकार्यन नारितिः चुडेबरायो भी सिंखाचे चामावस्य तिथिः वार्यस्य में बाद्यता षदा मराप्राचनमः क्योदेवानाम विद्येकः प्रान्त अत्वापवाना । इत्यासा नं अल्याकारे हिल्ला मोनेके के राजा दिशाणित तत्व पाषा देशे स्टिन् लयन नाम का का ताम स्थान के नाम के समान के समान

BISHE

शास्त्रकाथाः

म्यानियां के विश्व के कार्य क न्त्रांक्षीयम्भाकालेन्य्याः विवेवनिः व्यापामा शतभागान्त्राः विषेतुः स्रोतित्वनयारे विष्ति ज्ञानेत्वात्वारे जावना निर्वे विम्ता सिवन चेवर के माना व जुराव से माने देतर माना वापने चा हतमकासंस्थानम् जी विजीसत्यक्षायेणपितज्ञासंस्थ्यस यरिन स्थित प्रति कर कि विविध विविध स्थापि से स्थित स्थापि CC-0. Lal Rahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

विमेया हेर्चित्र स्वाज्य ज्ञाना रा वस्त्र केर प्रस्ता न स्वस्त्र ती वि वियम्म निर्मित्र मुश्चित्रकार्याच्या पालस्यविभयाता रेकाञ्चता विधितासत्त्र सायायसमायुक्तित्रात्त्र गाउपसम्बद्धाः सार्थाः ज युर्नेद पुर्वास्त्र का महिन्द कि विस्त्र वेशिया एउप क्षाने प्रति साम्य में मा उपयूक्ती जिन्द्र समामा स्वाम इति । विकास व किरिव्याम्याम् एप्येदावम्भित्रविक्षां स्त्रुत्तिवा विष्टे रामञ्जीविश्यानरपुर रोभीक्षाविश्वित्वस्वादेशोस्त्रार समा बारे या सम्बन्ध म प्राथन परिकाल के लिया जाति या राजिना प्राप्त साम व्यावव्यव्यव्यव्यानिकं अभिनेति निवासिका स्वानिका स्वानिका नि त्रेणा है। सिंदी असून देख से जान का का का किया है। कि का देख सिंदी के देख सिंदी के देख सिंदी के देख सिंदी के द

एवापप्रस्थानियं प्राप्तानिये प्रदेश स्थानिय विक्रिये विक्रिये स्थानिय निविय्विमस्प्रिय न्यक्त चित्रवयाध्यक्ति अवमान्ति यामा यसेन मः लाल्याराणनयः एवप्जाविश्विकता सताद्वाते पूर्धश्राम केरान कंशने वेतिय है। वेत्र मित्र के लिया के लिया निर्माण के किया है। मिलामा अलंका के बार हित्तव के विष्युते ता बूत प्रदक्षिण को खेता व क्रे तरकतम् तत्त्वस्य विश्वायपुर्धान्यः प्रतिकृते तथेश्वयन्याद्वाति मात्रकी जाम्याकोना वारिवर्दिक मादिवस्थायस्त्र माना एवल वर् परेगाक्षेष्ठतथीसर्गात् की वेद्यायापरिकाणने श्रामकिया STOPPEN AND STATE OF STATE OF